B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-II Paper-III Economics

Page No. 1
Date 6-10-2020

प्रेरित तथा स्वायत्त विनियोग

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन अथवा आय के परिवर्तनों द्वारा निर्धारित होने वाला विनियोग प्रेरित विनियोग (induced investment) होता है। समाज में व्यक्तियों की उपभोग्य आय (disposable income) में वृद्धि होने पर वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए प्रभावपूर्ण माँग में वृद्धि होती है, जिसकी पूर्ति करने के लिए उत्पादन विनियोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित होता है। इस प्रकार, प्रेरित विनियोग की मात्रा आय में वृद्धि अथवा कमी के साथ-साथ घटती-बढ़ती रहती है। दूसरे शब्दों में प्रेरित विनियोग आय-सापेक्ष (income elastic) होता है। अल्पकाल में पूँजी-उत्पादन के स्थिर होने के कारण आय तथा प्रेरित विनियोग के मध्य एक सीधा अनुपाती सम्बंध होता है।

स्वायत्त विनियोग (autonomous investment) आय के परिवर्तनों द्वारा प्रभावित नहीं होता है अर्थात आय-निरपेक्ष (income inelastic) होता है। वहाँ पूँजी व्यय (capital expenditure) जो प्रत्यक्ष रूप में समग्र माँग में होने वाले परिवर्तनों द्वारा प्रभावित नहीं होता है, स्वायत्त विनियोग कहलाता है। नवीन प्रक्रियाएँ, आविष्कार, जनसंख्या की वृद्धि, युद्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितियाँ श्रम-आन्दोलन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, दीर्घकालीन सम्भावनाएँ आदि प्रमुख कारण स्वायत्त विनियोग की मात्रा को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार आय की मात्रा स्थिर रहने पर स्वायत्त विनियोग में परिवर्तन हो सकता है तथा आय में परिवर्तन होने पर भी स्वायत्त विनियोग की मात्रा स्थिर रह सकती है। आर्थिक विकास के उद्देश्य से सड़कों का निर्माण, जन-कल्याण के लिए अस्पतालों का निर्माण, अनुसंधान व विकास पर किया जाने वाला दीर्घकालीन विनियोग स्वायत्त विनियोग के उदाहरण हैं।